कालाज़ार की दवा की असफलता

कालाज़ार नामक घातक रोग एक परजीवी सूक्ष्मजीव *लेशमानिया डोनोवानी* के कारण होता है। इस परजीवी को फैलाने का काम एक मक्खी करती है। यह रोग अधिकतर विकासशील देशों में पाया जाता है जिनमें भारत, नेपाल, बांग्लादेश और ब्राज़ील शामिल हैं। नेपाल में किए गए ताज़ा अध्ययन से पता चला है कि इसके उपचार के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाई मिल्टेफोसीन 20 प्रतिशत मामलों में नाकाम रहती है।

दरअसल, कालाज़ार एक सामान्य रोग लेशमानिएसिस का वह रूप है जब रोग पूरे शरीर में फैल जाता है। आम तौर पर लेशमानिएसिस के लक्षणों में चमड़ी पर छाले, तिल्ली और लीवर की सूजन तथा नाक, मुंह और गले में श्लेष्मा अस्तर के विघटन के रूप में उभरते हैं। यदि इसका उपचार न किया जाए, तो यह जानलेवा साबित होता है।

कुछ वर्ष पहले तक कालाज़ार के लिए सोडियम स्टिबोग्लूकोनेट नामक दवा इस्तेमाल की जाती थी जो एंटीमनी आधारित थी और काफी ज़हरीली थी। बिहार में हुए अध्ययनों में पाया गया था कि यह 65 प्रतिशत मामलों में नाकाम रहती है। इसके बाद मिल्टेफोसीन आई जो काफी कारगर साबित हुई थी मगर ताज़ा अध्ययन इसकी असफलता दर 20 प्रतिशत तक बता रहे हैं।

इस अध्ययन में बेल्जियम, नेपाल और नेदरलैण्ड के शोधकर्ताओं ने नेपाल में कालाज़ार के 187 मरीज़ों को देखा जिनमें से 120 का इलाज मिल्टेफोसीन से किया गया था। उपचार के छः माह बाद 10 प्रतिशत मामलों में बीमारी वापिस प्रकट हो गई थी और एक वर्ष बीत जाने पर पूरे 20 प्रतिशत मामलों में।

अध्ययन में पता चला कि शुरुआत में सारे मरीज़ों पर दवा का अच्छा असर हुआ था। मगर छः माह बाद उपचार की दर गिरकर 82.5 प्रतिशत और एक वर्ष बाद मात्र 73.3 प्रतिशत रह गई। बीमारी के लौटकर प्रकट होने की संभावना 12 वर्ष से कम उम्र में सबसे ज़्यादा देखी गई।

अभी यह स्पष्ट नहीं है कि रोग के पुनः प्रकट होने का कारण क्या है मगर इतना पता चला है कि ऐसा नए संक्रमण, एचआईवी जैसे किसी अन्य संक्रमण, दवा की गुणवत्ता में कमी, उपचार के ठीक तरह से न होने या परजीवी सूक्ष्मजीव में प्रतिरोध क्षमता विकसित होने जैसे कारणों से नहीं होता है।

दरअसल, मिल्टेफोसीन कालाज़ार के उपचार की एकमात्र दवाई है। मगर विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी संस्थाओं ने शुरू से ही यह सिफारिश की थी कि इस दवा का अकेले उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। साथ में कुछ अन्य दवाइयों का उपयोग करने से असफलता की दर कम हो सकती है। मगर दिक्कत यह है कि जिन अन्य दवाइयों का उपयोग करने की सिफारिश की जाती है, उनके लिए मरीज़ को एक महीने अस्पताल में भर्ती रहना होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***